E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

कल्प वेदाङ्ग

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

विपुल वेदाङ्ग-साहित्य में कल्प का दूसरा स्थान है। कहीं-कहीं इतिहास में यह तीसरे स्थान में भी चर्चित है। वैदिक साहित्य में इसका अतिशय महत्त्वपूर्ण स्थान है। कल्प की प्रयोजनीयता का अनुभव तब हुआ, जब शतपथ आदि ब्राह्मणग्रन्थों में यज्ञ-यागादि के कर्मकाण्डीय व्यवस्था में विस्तार होने से उसके व्यवहार में कठिनता की अनुभूति होने लगी। उसकी पूर्ति के लिये कल्पसूत्रों की प्रतिशाखा में रचना हुई। ऋग्वेद प्रातिशाख्य के वर्गद्वय वृत्ति में कल्पके विषयमें कहा गया है–'कल्पो वेदविहितानां कर्मणामानुपूर्व्येण कल्पना शास्त्रम्' अर्थात् कल्प वेद-प्रतिपादित कर्मों का भलीभाँति विचार प्रस्तुत करनेवाला शास्त्र है। इसीलिये इसे वेद का हाथ कहा गया है-'हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते'।

कल्प वह वेदांग-शास्त्र है जिसके द्वारा हमें विविध प्रकार के श्रौत, गृह्य तथा राजनीतिक और सामाजिक कर्त्तव्यों के पालन करने की विधि मालूम होती है । यज्ञादि कार्य श्रौत, पाकयज्ञ, पंच महायज्ञ तथा सोलह संस्कार गृह्य, एवं हमारे विविध राजनीतिक और सामाजिक व्यवहार धार्मिक कर्तव्य हैं ।

निष्कर्ष यह है कि जिन यज्ञ-यागादि विधानों का, विवाह-उपनयन आदि कर्मों का महत्त्वपूर्ण प्रतिपादन वैदिक ग्रन्थों में किया गया है, उन सूत्र-ग्रन्थों का नाम है–'कल्प'। इसकी प्राचीनता के विषय में ऐतरेयारण्यक में विपुल प्रमाण हैं।

कल्पसूत्रकी व्युत्पत्ति और व्यापकता-

सामान्य नियम के अनुसार कल्प और सूत्र इन दोनों शब्दों में संयोग से कल्पसूत्र की रचना होती है। कल्प वह विलक्षण शब्द है, जो किसी विशिष्ट अर्थ को प्रकट करता है। वह विलक्षण अर्थ

है-विधि, नियम, न्याय, कर्म और आदेशके अर्थ में प्रयुक्त परिव्याप्ति। इसी प्रकार 'सूत्र' शब्द का विशिष्ट अर्थ होता है-संक्षेप।

सूत्र-रचना का उद्देश्य-

वैदिक वाङ्मय के इतिहास में कल्पसूत्रों का आविर्भाव नवीन युग का सूत्रपात है। यह भी एक विशिष्ट उद्देश्य था कि प्राचीन वैदिक युग में उसके साहित्य का विस्तार दुर्गम और रहस्यमय होने से उसका यथार्थ ज्ञान कठिन था, उसी दुरूहताको दूर करनेके लिये सूत्र-युग का आविर्भाव हुआ। वस्तुतः जब कर्म-काण्ड विषयक साहित्य इतना विशाल और विस्तीर्ण हो गया कि उसका स्मरण रखना मानव-शक्ति का उल्लंघन करने लगा तो वैदिक ऋषियों ने उन्हें सूत्रों के रूप में ढाल दिए । सूत्र उन छोटे-छोटे वाक्यों को कहते हैं जिनमें शब्द तो थोड़े रहते हैं, पर वे अर्थ से परिपूर्ण रहते हैं। सूत्र को इस रूप से परिभाषित किया जाता है-

अल्पाक्षरं असंदिग्धं सारवत् विश्वतोमुखम्।

अस्तोभं अनवद्यं च सूत्रं सूत्र विदो विदुः।।

अर्थात् कम अक्षरों वाला, संदेहरहित, सारस्वरूप, निरन्तरता लिये हुए तथा त्रुटिहीन (कथन) को सूत्रविद सूत्र कहते हैं।

कल्पसूत्रों के भेद-

कल्पसूत्रों के मुख्यतः तीन भेद होते हैं- श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र और धर्मसूत्र। किन्हीं के मत में चौथा भेद भी है। वे शुल्बसूत्र को भी कल्पसूत्रों में ही मानते हैं, परंतु इसमें 'ज्यामिति आदि विज्ञान' के समन्वित होनेके कारण इसे पृथक् कहा गया है।

श्रौतसूत्रों में श्रुति-प्रोक्त चौदह यज्ञों का मुख्य रूप से कर्तव्य-विधान है। इनमें ऋग्वेद के आश्वलायन और शांखायन दो श्रौतसूत्र हैं।

इसी प्रकार गृह्यसूत्रों में आश्वलायन और पारस्कर गृह्यसूत्र अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। वैसे प्रत्येक वेद के अलग-अलग गृह्यसूत्र हैं। गृह्यसूत्रों के अनुसार १६ संस्कार होते हैं – १. गर्भाधान, २. पुंसवन, ३. सीमन्तोन्नयन ४. जात कर्म, ५. नामकरण, ६. निष्क्रमण, ७. अन्नप्राशन, ८. चूड़ाकरण ६. उपनयन १०.

वेदाध्ययन, ११. महाव्रत, १२. उपनिषद् व्रत, १३. गोदान व्रत, १४. समावर्त्तन, १५. विवाह और १६. अन्त्येष्टि। आश्वलायन गृह्यसूत्र चार अध्यायों में विभक्त है। प्रथम अध्याय में विवाह, श्रमा पूर्णिमा-पार्वण, पशु यज्ञ, चैत्य यज्ञ, गर्भाधन, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण अन्नप्राशन, चूड़ाकरण, गोदानकर्म, उपनयन और ब्रह्मचर्याश्रम का विवरण है। द्वितीय में श्रावणी, अश्वयुजी, ग्रहायणी, अटका, गृहनिर्माण, और गृह प्रवेश का विवरण है। तृतीयाध्याय में प्रतिदिन सम्पादनीय पंचयज्ञ की कथा है। चतुर्थाध्याय में अन्त्येष्टि और श्राद्ध का विवरण है।

धर्मसूत्रों में चारों वर्णों के कर्तव्यकर्म और व्यवहार के साथ राजधर्म का वर्णन मुख्य है। इनमें मानवधर्मसूत्र, जिसके आधार पर मनुस्मृति की रचना हुई, अभी भी अनुपलब्ध है। प्राप्त धर्मसूत्रों में- गौतमधर्मसूत्र, बौधायनधर्मसूत्र, आपस्तम्बधर्मसूत्र, हिरण्यकेशिधर्मसूत्र, वसिष्ठधर्मशास्त्र, वैखानसधर्मसूत्र और विष्णुधर्मसूत्र आदि मुख्य हैं। ये वेदों के अनुपूरक हैं।

शूल्बसूत्रों में यज्ञवेदिनिर्माण की प्रक्रिया का विवेचन हुआ है। विभिन्न प्रकार की वेदियों के निर्माण की विधि रेखागणितीय आधार पर बतलायी गयी है। भारतीय रेखागणित के मूलसूत्र इन्हीं ग्रन्थों में प्राप्त हैं। शुल्व का अर्थ है- धागा । यज्ञ वेदि का निर्माण धागे द्वारा ही नापकर किया जाता था; इसलिए इन ग्रन्थों का नामकरण शुल्वसूत्र किया गया है।